शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्दौर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु विद्यालयों में संचालित शैक्षिक निर्देशन सेवा का अध्ययन

दीपिका हुरमाड़े
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
भारती पाटीदार, एम. एड. छात्रा
शिक्षा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शैक्षिक निर्देशन विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक समस्याओं से बचाने व समाधान करने की एक अतिमहत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की सभी शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है ताकि विद्यार्थी अपना विकास निर्बाध रूप से कर सके व भविष्य में राष्ट्र व समाज के विकास में अपनी उचित सहभागिता दे सके। चूंकि शिक्षा के स्रोत के रूप में विद्यालयों, महाविद्यालयों व विशावविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है अतः इनकी सर्वाधिक उत्तरदायित्व भी बनता है कि ये अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान उचित प्रकार से करें। बालक के जीवन को सँवारने में सभी स्तर की शिक्षाओं का समान स्थान होता है। बालक की विकास की अवस्थाओं की विशेषताओं के आधार पर उसकी उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 9वीं-10वीं) की अवस्था सबसे महत्वपूर्ण होती है, यहाँ विद्यार्थी के विकास के सभी पहलुओं में अपूर्व परिवर्तन होते हैं इसलिए यहाँ पालकों व शिक्षकों को तुलनात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थी पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होती है। कक्षा 10 वीं के पश्चात विद्यार्थियों की भविष्य हेतु विषयों का चयन भी होता है इसलिए इस स्तर पर विद्यालयों में विद्यार्थियों को शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने की आवश्यकता अधिक होती है।

1.1.0 परिचय

बालक को शिक्षा इस उद्देश्य के साथ दी जाती है कि वह अपने ज्ञान, कौशलों और मूल्यों का समुचित विकास कर पाये और इनकी सहायता से अपने भावी जीवन को सुरक्षित व सुखी रख सकें। राष्ट्र व समाज अपने औपचारिक, अनौपचारिक व औपचारिकेत्तर साधनों से अपने बालक-बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व निभाते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि ये बालक-बालिकाएँ ही भविष्य में राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक के रूप में कार्य करेंगे तथा राष्ट्र व समाज को मजबूती प्रदान करेंगे। अपना विकास करने और राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने की इस लंबी प्रक्रिया में व्यक्ति के सामने कई समस्याएँ और चुनौतियाँ आती हैं। विद्यालय, घर-परिवार व समाज द्वारा बालक को वे सभी अनुभव प्रदान करने के प्रयत्न किए जाते है, जो उसे भविष्य हेतु तैयार करने में सहायक होते है। चूंकि बालक अपने विकास हेतु विद्यालयीन जीवन में विद्यालय, घर-परिवार व

समाज पर निर्भर रहता है, इसलिए इनमें आने वाला हर बदलाव बालक के लिए समस्याएँ व चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। इन समस्याओं के कारण उसका शैक्षिक जीवन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है तथा उसका विकास अवरूद्ध हो जाता है। एक सामान्य व्यक्ति की भांति विद्यार्थी भी स्वयं को इस समस्या की स्थिति से बाहर निकालने का प्रयत्न तो करते हैं, किन्तु अल्पविकसित होने की वजह से समस्या के समाधान में असमर्थ होते हैं। शैक्षिक निर्देशन विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक समस्याओं से बचाने व समाधान करने की एक अतिमहत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की सभी शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है ताकि विद्यार्थी अपना विकास निर्बाध रूप से कर सके व भविष्य में राष्ट्र व समाज के विकास में अपनी उचित सहभागिता दे सके। चूंकि शिक्षा के स्त्रोत के रूप में विद्यालयों, महाविद्यालयों व विशावविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है अतः इनकी सर्वाधिक उत्तरदायित्व भी बनता है कि ये अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान उचित प्रकार से करें।

1.1.1 निर्देशन का अर्थ व परिभाषा

विश्व में निर्देशन की औपचारिक शुरूआत 1908 में फ्रेंकपार्सन्स के प्रयासों से हुई है। बढ़ती आवश्यकताओं व जटिलताओं के परिणामस्वरूप निर्देशन की प्रक्रिया व सेवाओं कई बदलाव आए हैं। सन् 1940 के आसपास शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन आया। इसके कुछ वर्ष बाद सन् 1970-80 के आसपास इसमें शोध भी होने लगे। सामान्यतः निर्देशन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसके आधार पर किसी एक अथवा अनेक व्यक्तियों को किसी न किसी प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। इस सहायता के आधार पर, समस्याओं के सम्बन्ध में विवेक युक्त निष्कर्ष निकालने, वांछित निर्णय लेने तथा अपने लक्ष्यों, उद्देश्यों को प्राप्त करने में सुगमता होती है। निर्देशन से ही व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों तथा व्यक्तित्व से सम्बंधित विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है तथा वह स्वयं में निहित विशेषताओं का समुचित उपयोग करने में सक्षम हो पाता है। निर्देशन के आशय की दृष्टि से यह विशेष उल्लेखनीय है, कि निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है, अपितु इसके आधार पर किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है। वह अपनी समस्याओं का समाधान करने में स्वयं ही सक्षम हो सके। "निर्देशन एक ऐसी सेवा है, जिसमे एक अधिक अनुभवी व्यक्ति कम अनुभवी व्यक्ति की सहायता करता है ताकि वह चयन कर सके, निर्णय ले सके व अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके।"

गुड के अनुसार - "निर्देशन व्यक्ति के दृष्टिकोणों एवं उसके बाद के व्यवहार को प्रभावित करने के उद्देश्य से स्थापित, गतिशील आपसी सम्बन्धों का एक प्रक्रम है।"

जे. एम. ब्रिवर के अनुसार - "निर्देशन एक ऐसा प्रक्रम है, जो व्यक्ति को अपनी समस्याओं को हल करने में स्वयं निर्देशन की क्षमता का विकास करता है।"

1.1.2 शैक्षिक निर्देशन अर्थ,परिभाषा

शैक्षिक निर्देशन का सम्बन्ध पाठ्यक्रम एवं विषयों के चुनाव, उनकी अध्ययन प्रक्रिया में रूचि, योग्यता तथा अभिरूचियों के अनुसार छात्र को सहायता प्रदान करना है, जो उसके समायोजन के लिये आपेक्षित है। जांस के

अनुसार -"शैक्षिक निर्देशन का संबंध छात्रों को प्रदान की जाने वाली उस सहायता से है जो विद्यालयों, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रमों एवं विद्यालय जीवन से सम्बद्ध चुनावों एवं समायोजन के लिए अपेक्षित है।"

सामाजिक-सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों का प्रभाव शैक्षिक वातावरण पर भी पड़ा है। इससे शिक्षा प्रक्रिया में कई परिवर्तन आए हैं। व्यक्तिगत भिन्नता के प्रभाव से शिक्षा बालकेन्द्रित हुई है और आर्थिक विकास के प्रभाव से व्यवसाय केन्द्रित हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में हुए इन परिवर्तनों से बालक, उसके माता-पिता, शिक्षक और शिक्षा प्रबन्धकों के सामने कई समस्याएँ व चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता महसूस की जाती है। शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता निम्न बिन्दुओं के आधार पर भी समझी जा सकती हैं जैसे - उचित पाठ्यक्रम तथा पाठ्यविषयों के चयन हेतु, अग्रिम शिक्षा की उचित जानकारी हेतु, नवीन विद्यालयों में समायोजन हेतु, शिक्षा में अपव्यय व अवरोधन रोकने हेतु, कक्षा व्यवस्था बनाने हेतु, आपसी सम्बन्धों को सौहार्द्रपूर्ण बनाने हेतु इत्यादि।

1.1.3 माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक निर्देशन के उद्देश्य

1952-53 में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' ने निर्देशन सेवाओं को माध्यमिक शिक्षा का अभिन्न अंग मानने की सिफारिश की। आयोग ने अपनी रिपोर्ट का एक पूरा अध्याय निर्देशन के लिए अर्पित करके इन सेवाओं की आवश्यकता पर न केवल बल दिया, वरन् उनके महत्व को भी सिद्ध किया। भारत सरकार ने आयोग की सिफारिश को स्वीकार करके माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था करने की दिशा में सक्रिय कदम उठाये। तब से लेकर वर्तमान तक सभी आयोगों व समितियों ने विद्यालयों में निर्देशन इकाइयों की स्थापना व निर्देशन कार्यक्रमों के संचालन की अनुशंसा की है, एनसीईआरटी द्वारा प्रारम्भ से ही देश के विद्यालयों में निर्देशन के स्वरूप के निर्धारण हेतु कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं। जनवरी, 2015 में रमसा के अंतर्गत विद्यालयों में निर्देशन सेल हेतु एनसीईआरटी द्वारा राज्यों के लिए दिशानिर्देशन जारी किए गए हैं, जिसके अंतर्गत विद्यालयों में शैक्षिक निर्देशन की गतिविधियों को प्रमुखता से शामिल किया गया है।

बालक के जीवन को सँवारने में सभी स्तर की शिक्षाओं का समान स्थान होता है। बालक की विकास की अवस्थाओं की विशेषताओं के आधार पर उसकी उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 9वीं-10वीं) की अवस्था सबसे महत्वपूर्ण होती है, यहाँ विद्यार्थी के विकास के सभी पहलुओं में अपूर्व परिवर्तन होते हैं, इसलिए यहाँ पालकों व शिक्षकों को तुलनात्मक दृ-ष्टिकोण से विद्यार्थी पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होती है। कक्षा 10 वीं के पश्चात विद्यार्थियों की भविष्य हेतु विषयों का चयन भी होता है, इसलिए इस स्तर पर विद्यालयों में विद्यार्थियों को शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने की आवश्यकता अधिक होती है। माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक निर्देशन के निम्न लक्ष्य हैं - 1.विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं के आकलन में सहायता देना, 2. उच्च शिक्षा संस्थानों की जानकारी प्रदान करना, 3. विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुसार पाठ्यक्रम चयन करने में सहायता प्रदान करना,

4. अच्छी अध्ययन शैली का विकास करना, 5. समायोजन क्षमता विकसित करना व 6. अधिक से अधिक उचित शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना।

1.2.0 औचित्य

आधुनिक भारतीय परिवार का रूप इतना परिवर्तित हो गया है, कि बालक उसमें रहकर अपने पिता से किसी कार्य या व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर सकता है। बालक के माता-पिता अपने स्वयं के कार्य और सामाजिक संसार में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास किसी प्रकार का निर्देशन देने के लिए समय नहीं बचता है। भारत में व्यवसायों का इतना बाहुल्य हो गया है, कि छात्र अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय का चयन नहीं कर सकता है। स्वतंत्र भारत में इतने आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हुए है कि छात्र यह निश्चित नहीं कर पाता कि किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके वह इन परिवर्तनों से अपना समायोजन कर सकता है। उक्त सभी परिवर्तनों के कारण भारतीय विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की समुचित व्यवस्था की आवश्यकता है।

जब से मानव जीवन अस्तित्व में आया है तब से मनुष्य ने अपने लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिए कार्य करना प्रारंभ कर दिया। इन कार्यों का पूर्ण करने में व्यक्ति को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है जिसका प्रभाव व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करने लगा, साथ ही विद्यार्थी जीवन भी प्रभावित होने लगा। विद्यार्थी को परीक्षाओं में कम अंक आना, धन सम्बन्धी समस्याओं का अनुभव व अस्वस्थता आदि के कारण इन सभी समस्याओं का समाधान निकालने के लिए ही विद्यालय में निर्देशन देने की प्रक्रियाओं को आरम्भ किया गया, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जा रहा है। यह निर्देशन इकाई विद्यालयों में कितने प्रभावी ढंग से अपने कार्यक्रम संचालित कर पा रही है, इसकी प्रभावीकता जानने हेतु ही शोधार्थी ने शोध कार्य हेतु इस क्षेत्र का चयन किया।

शोधार्थी ने पूर्व शोध अध्ययनों में पाया कि सारस्वत (1992), फ्लोस्टे एवं राक्स (2012), घमारी (2013), कौर (2014) ने विद्यालय के भिन्न-भिन्न स्तर के विद्यार्थियों की निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता व जरूरतों का अध्ययन किया व निष्कर्ष के रूप में पाया कि व्यावसायिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक क्षेत्रों में निर्देशन की आवश्यकता पाई गई साथ ही ग्रामीण विद्यार्थियों को शहरी की तुलना में अधिक निर्देशन की आवश्यकता है। महाराणा (2003), पाटीदार (2005), सेनापति (1998) ने निर्देशन एवं परामर्श में प्रमाप की प्रभावित को बी.एड. स्तर पर उपलब्धि एवं प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में अध्ययन किया, व निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थी की प्रतिक्रिया प्रमाप के प्रति सकारात्मक पाई गई, एवं उपलब्धि प्रेरणा में विद्यार्थी की उपलब्धि को प्रभावित किया। गिरिजा (1992), कौर (1991), सेल्डा (2012) ने विद्यालय के भिन्न-भिन्न स्तर पर निर्देशन सेवाओं का मूल्यांकन किया व निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण की तुलना में शहरी क्षेत्रों में निर्देशन कार्यक्रम की सकारात्मक भूमिका पाई गई। दण्डपानी (1976), अब्दुल्ला (2012) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर समूह निर्देशन कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया व निष्कर्ष के रूप में पाया कि विद्यालय के निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समूह निर्देशन व्यापक रूप से प्रभावित करता है।

निर्देशन सेवाओं के सम्बन्ध में अब तक हुए सभी शोध कार्य के विद्यालय में संचालित हो रही शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक निर्देशन व स्वास्थ्य निर्देशन के संचालन की प्रक्रियाओं को जानने हेतु बहुत कम शोध कार्य हुये हैं। वर्तमान तक शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में उपरोक्त के साथ साथ कई शोधकार्य हुये है किन्तु प्राप्त शोधकार्यों के आधार पर स्पष्ट है कि शोध शीर्षक - 'इन्दौर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु विद्यालयों में संचालित निर्देशन सेवाओं का अध्ययन' पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया, अतः प्रस्तुत शीर्षक पर शोध कार्य करने कि आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

1.3.0 समस्या कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन का शीर्षक निम्न है -

इन्दौर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु विद्यालयों में संचालित निर्देशन सेवाओं का अध्ययन

1.4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य निम्न है -

1. इन्दौर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर विद्यालयों में संचालित शैक्षिक निर्देशन सेवा का अध्ययन करना।

1.5.0 शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

1.6.0 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्धता प्राप्त इन्दौर शहर के 02 विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 09 वीं व 10 वीं) के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में सुविधाजनक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में छात्र व छात्राएं दोनों शामिल थे।

क्र.	विद्यालयों के नाम	विद्यार्थियों की संख्या
1.	केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 01 इन्दौर	40
2.	चोइथराम स्कूल मानिकबाग रोड, इन्दौर	60
	योग	100

1.7.0 उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु संचालित शैक्षिक निर्देशन सेवा: विद्यार्थी प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रस्तुत प्रश्नावली में कुल ग्यारह प्रश्न थे। प्रश्नावली में विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु संचालित शैक्षिक निर्देशन की गतिविधियों, विद्यालय में निर्देशन इकाई, शैक्षिक समस्याओं, शैक्षणिक प्रतियोगिताओं का आयोजन, पेरेन्ट्स टीचर मीटिंग, विषय चयन सम्बन्धी समस्याओं आदि से संबन्धित प्रश्न थे। प्रश्नावली में बंद प्रकार के प्रश्न थे। प्रश्नावली में बंद प्रश्न के सामने उससे सम्बन्धित संभावित विकल्प दिये गए थे तथा उत्तरदाता को उन्हीं उत्तरों में से किसी एक का या एक से अधिक उत्तर का चयन कर अपने विचारों को अभिव्यक्त करना होता था।

1.8.0 **प्रदत्त संकलन**

प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया में सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 01 इन्दौर व चोइथराम स्कूल, मानिक बाग रोड, इन्दौर के प्राचार्यों से अनुमति ली गई। उन्हें शोध के उद्देश्यों से परिचित कराया गया। प्राचार्य से

समय निर्धारण कर केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 01 से 40 विद्यार्थियों तथा चोइथराम स्कूल, माणिक बाग रोड, इन्दौर से 60 विद्यार्थियों से शोधार्थी द्वारा निश्चित दिनांक पर विद्यालय जाकर संपर्क किया गया व प्रदत्त संकलन हेतु उपलब्ध विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया गया। साथ ही उन्हें स्पष्ट किया गया कि प्रश्नावली से प्राप्त फलांक पूर्णतः गोपनीय रखे जाएंगे व प्राप्त फलांकों का आपके परीक्षा परिणाम पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होगा। इसके पश्चात इच्छुक विद्यार्थियों को प्रश्नावली प्रदान की गई व उनके उत्तर देने के पश्चात वापस लेकर प्रत्येक प्रश्नावली के प्राप्त फलांक ज्ञात किए।

1.9.0 प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा प्रदत्त विश्लेषण हेतु आवृत्ति एवं प्रतिशत का उपयोग किया गया।

1.10.0 परिणाम एवं विवेचना

शोध के उद्देश्य - इन्दौर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर विद्यालयों में संचालित शैक्षिक निर्देशन सेवा का अध्ययन करना, के लिए विद्यार्थियों पर प्रश्नावली के प्रशासन व प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत परिणाम व उनकी विवेचना प्रश्नवार नीचे दी गई है -

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. एक "आपके विद्यालय में निर्देशन इकाई के होने की सूचना आपको कैसे प्राप्त हुई ?" था। उत्तर हेतु प्रश्न के चार विकल्प विद्यालय के कार्यालय से, कक्षा के बाहर साथियों से, कक्षा में शिक्षकों से व कक्षा में साथियों से दिये गए थे। प्रस्तुत इस प्रश्न के उत्तर में उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों में से 22 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय में निर्देशन इकाई के होने की सूचना कार्यालय से, 20 प्रतिशत विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर साथियों से, 41 प्रतिशत विद्यार्थियों को कक्षा में शिक्षकों से व 15 प्रतिशत को कक्षा में साथियों से प्राप्त होना पाया गया व इस प्रश्न हेतु 02 प्रतिशत विद्यार्थियों ने किसी भी विकल्प का चयन नहीं किया।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. दो "शिक्षण के दौरान आपके समक्ष कौन-कौन सी शैक्षिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं ? था। प्रश्न के उत्तर हेतु पाँच विकल्प अक्षर की बनावट, लिखने से सम्बन्धित, पढ़ने से सम्बन्धित, याद रखने से सम्बन्धित व अंग्रेजी भाषा से सम्बन्धित दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में 8 प्रतिशत विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान अक्षरों को बनाने में, 20 प्रतिशत विद्यार्थियों को लिखने में, 5 प्रतिशत को पढ़ने में, 42 प्रतिशत को याद करने में, 16 प्रतिशत विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में समस्याएँ उत्पन्न होना पाया गया व इस प्रश्न हेतु 09 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कोई विकल्प चयन नहीं किया ।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. तीन "निम्न विषयों का अभ्यास करने में विद्यार्थी अधिक कठिनाई अनुभव करते है ?" प्रश्न के उत्तर हेतु पाँच विकल्प हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, अंग्रेजी व विज्ञान दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों में से 13 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हिन्दी, 15 प्रतिशत ने अंग्रेजी, 38 प्रतिशत ने गणित, 15 प्रतिशत ने संस्कृत, व 27 प्रतिशत ने विज्ञान विषय में कठिनाई का अनुभव होना पाया। इस प्रश्न हेतु 02 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कोई विकल्प चयन नहीं किया।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. चार "ऊपर चुने गए विषय में आ रही कठिनाईयों के समाधान हेतु विद्यार्थी किसकी सहायता लेते हैं ?" था। उत्तर हेतु प्रश्न में पाँच विकल्प निर्देशन इकाई प्रमुख की, कक्षा अध्यापक की, अभिभावक की, मित्रों की व रिश्तेदारों की दिये गए थे (प्रत्येक विद्यार्थी के पास एक से अधिक विकल्प चयन करने की स्वतंत्रता थी)। प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों में से 13 प्रतिशत विद्यार्थी निर्देशन इकाई के प्रमुख की, 44 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा अध्यापक की, 24 प्रतिशत विद्यार्थी अभिभावक की, 39 प्रतिशत विद्यार्थी मित्रों की व 5 प्रतिशत विद्यार्थी रिश्तेदारों की सहायता लेते पाये गये। साथ ही विद्यार्थी ट्यूशन व टीचर से भी सहायता लेते पाये गये।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. पाँच "विद्यालय में समय-समय पर विद्यार्थियों हेतु कौन-कौन सी शैक्षणिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है ?" था। उत्तर हेतु प्रश्न में पाँच विकल्प प्रश्नोत्तर कालांश, निबंध लेखन, कहानी लेखन, तात्कालिक भाषण, भाषण प्रतियोगिता व वाद-विवाद प्रतियोगिता दिये गए थे (प्रत्येक विद्यार्थी के पास एक से अधिक विकल्प चयन करने की स्वतंत्रता थी)। प्रस्तुत प्रश्न हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों में से 63 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रश्नोत्तर कालांश, 72 प्रतिशत विद्यार्थियों ने निबंध लेखन, 58 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहानी लेखन, 66 प्रतिशत विद्यार्थियों ने तात्कालिक भाषण, 68 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भाषण प्रतियोगिता व 78 प्रतिशत विद्यार्थियों ने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन करना स्वीकार किया।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. छः "विद्यालय प्रबंधन द्वारा विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाया जाता है?" था। उत्तर हेतु प्रश्न में दो विकल्प हाँ व नहीं दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों में से 34 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में व 66 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में अनुक्रिया व्यक्त की। जिन विद्यार्थियों ने हाँ में अनुक्रिया व्यक्त की थी उन्हें विद्यालय प्रबंधन द्वारा सफारी एक्टिविटी पार्क, सोमानी पुरम, ब्रेड फेक्ट्री, वाटर बाटल फेक्ट्री, नखराली ढ़ाणी, वृद्धाश्रम जैसी जगहों पर शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाना पाया गया।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. सात "यदि विषय चयन संबंधी निर्णय लेना हो तो आप निम्न में से किसकी सहायता लेंगे ?" था। उत्तर हेतु प्रश्न में छः विकल्प निर्देशन इकाई प्रमुख से, कक्षा अध्यापक से, भाई-बहन से, अभिभावक से, मित्र से व रिश्तेदार से दिये गए थे (प्रत्येक विद्यार्थी के पास एक से अधिक विकल्प चयन करने की स्वतंत्रता थी)। प्रस्तुत प्रश्न हेतु 25 प्रतिषत विद्यार्थी विषय चयन सम्बन्धी समस्या समाधान हेतु निर्देशन इकाई प्रमुख से, 24 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा अध्यापक से, 69 प्रतिशत अभिभावक से, 49 प्रतिशत भाई-बहन से, 30 प्रतिशत मित्रों से व 21 प्रतिशत रिश्तेदारों से सहायता लेते पाये गए।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. आठ "विद्यालय में पेरेन्ट्स टीचर मीटिंग में शिक्षक विद्यार्थी से जुड़ी समस्याओं की चर्चा अभिभावकों से करते हैं ?" था। प्रश्न में उत्तर हेतु दो विकल्प हाँ व नहीं दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न हेतु 88 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार उनके शिक्षक विद्यार्थी से जुड़ी समस्याओं की चर्चा अभिभावकों से करते

पाये गए तथा 12 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार उनके शिक्षक विद्यार्थी से जुड़ी समस्याओं की चर्चा अभिभावकों से नहीं करते पाये गए। प्रायः शिक्षक विद्यार्थियों के कम अंक आने, बहुत अधिक बात करने, कक्षा में देरी से आने, कक्षा में बहुत शांत रहने, अक्षरों की बनावट सही न होने, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने जैसी समस्याओं के लिए शिक्षक विद्यार्थियों के अभिभावकों से चर्चा करते पाये गए।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. नौ "शिक्षक विद्यार्थियों की इन समस्याओं के समाधान में सहायता करते है ?" था। प्रश्न में उत्तर हेतु दो विकल्प हाँ व नहीं दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न हेतु 86 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में व 14 प्रतिशत ने नहीं में अनुक्रिया व्यक्त की। जिन विद्यार्थियों ने हाँ में अनुक्रिया व्यक्त की, उनके अनुसार शिक्षक शैक्षिक निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन करके, विशेषज्ञों को आमंत्रित करके, सम्मेलन व कार्यशाला का आयोजन करके विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करने में सहयोग करते पाये गए।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. दस "विद्यार्थियों के अभिभावक शिक्षण शुल्क जमा करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं ?" था। प्रश्न में उत्तर हेतु दो विकल्प हाँ व नहीं दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न हेतु 15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में व 85 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में अपनी अनुक्रिया व्यक्त की। जिन विद्यार्थियों ने हाँ में अनुक्रिया व्यक्त की, उनक¢ अनुसार शिक्षण शुल्क जमा करने में आ रही कठिनाई को दूर करने हेतु उनके पालक निर्देशन इकाई प्रमुख से सलाह लेकर, विद्यालय के प्राचार्य को आवेदन कर, शैक्षिक ऋण लेकर अपनी समस्या का समाधान करते पाये गए।

प्रश्नावली का प्रश्न क्र. ग्यारह "क्या निर्देशन इकाई प्रबंधक द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर शासकीय छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी जाती है ?" था। प्रश्न में उत्तर हेतु दो विकल्प हाँ व नहीं दिये गए थे। प्रस्तुत प्रश्न हेतु 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाँ में व 66 प्रतिशत विद्यार्थियों ने नहीं में अपनी अनुक्रिया व्यक्त की, जबकि 3 प्रतिशत विद्यार्थियों ने किसी प्रकार की अनुक्रिया नहीं दी। जिन विद्यार्थियों ने हाँ में अनुक्रिया व्यक्त की थी निर्देशन इकाई द्वारा उन्हें NISE, IMO, Olympiads, NCSC, NCC आदि की छात्रवृत्ति योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान प्रदान करना पाया गया।

1.11.0 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1 अधिकांश विद्यार्थियों को विद्यालय में निर्देशन इकाई होने की सूचना कक्षा में शिक्षकों से प्राप्त होना पाया गया

2 अधिकांश विद्यार्थियों को विषयवस्तु याद करने व गणित विषय से संबन्धित समस्याएँ पाई गई। इन समस्याओं के समाधान हेतु विद्यार्थी शिक्षकों, अभिभावकों व सहपाठियों से सहयोग लेते पाये गए

3 विद्यालयों में प्रश्नोत्तर कालांश, निबंध लेखन, कहानी लेखन, तात्कालिक भाषा, भाषा व वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन होना पाया गया। विद्यालय प्रबंधन द्वारा विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु बाहर बहुत ही कम ले जाना पाया गया।

4 विषय चयन सम्बन्धी समस्या समाधान हेतु विद्यार्थी अपने पालकों व भाई-बहनों अधिक सहायता लेते पाये गए। विद्यार्थी अपने विषयों

के चयन से संबन्धित निर्णय में निर्देशन इकाई प्रमुख की सहायता कम लेते पाये गए ।

5 निर्देशन इकाई द्वारा विद्यालय में शैक्षिक निर्देशन हेतु गतिविधियों का संचालन करना पाया गया। साथ ही यह भी पाया गया, कि निर्देशन इकाई व विद्यार्थियों के मध्य सूचनाओं के आदान-प्रदान में सुधार आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 *Agrawal, R. (2006).Educational Vocational Guidance and Counseling (Principles, Techniqueis and Programmes). Delhi, Shipra Publications.*

2 *Bhatnagar, A. & Gupta, N. (Eds.). (1999). Guidance and Counselling (Volume II: A Practical Approach). New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.*

3 *Havighurst, R.J.(1993). Human Development and Education. New York, David McKay.*

3 दास, जे. (1993). शिक्षा अध्ययनशाला विभाग में निर्देशन इकाई की स्थापना हेतु अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध इन्दौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

4 राय, ए. एवं अस्थाना, एम. (2009). निर्देशन एवं परामर्शन(संप्रत्यय, क्षेत्र एवं उपागम). दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास

5 शर्मा, आर.पी. (2014). वृत्तिक निर्देशन एवं रोजगार सूचना. मेरठ, आर. लाल बुक डिपो.

6 शर्मा, आर.पी. (2008). शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श. मेरठ, आर. लाल बुक डिपो. ***7***

7 *उपाध्याय, आर. एवं जायसवाल, एस. (2014). शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन*